स्नातक
संस्कृत, सेमेस्टर IV , MJC - V , Unit - 5, छन्द

वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री

1. <u>आर्या</u> - छन्द आर्या मात्रिक छन्द है जिसका लक्षण निम्न है -

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ गु०
S S, S S, I I S, S S, S I I, I S I, I I S, S
लक्ष्मैतत्सप्त गणा गोपेता भवति नेह विषमे जः ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ल० ७ गु०
S S, S I I, S S, I I S S I I I, S S S
षष्ठोऽयं नलघू वा प्रथमेऽर्धे नियतमार्यायाः ॥१॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ गु०
S S I S I S I I S S I I S I I I I I I I I S
षष्ठे द्वितीयलात्परके न्ले मुखलाच्च सयतिपदनियमः ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ल० ७ गु०
I I S, S S, I I S, S S, I I I, I I S, S S
चरमेऽर्धे पञ्चमके तस्मादिह भवति षष्ठो लः ॥२॥

अन्वय - आर्यायाः प्रथमेऽर्धे एतत् लक्ष्म नियतम् (अस्ति) गोपेताः सप्तगणाः (भवन्ति), इह विषमे जः न भवति, षष्ठः अयम् (जः भवति), वा नलघू (भवतः) । च षष्ठे न्ले द्वितीयलात् (पूर्वम्) परके (न्ले) मुखलात् (पूर्वम्) सयतिपदनियमः । चरमेऽर्धे (एतत् लक्ष्म नियतम्) पञ्चमके (न्ले) तस्मात् (सयतिपदनियमः) इह षष्ठो लः भवति ।

अर्थ - आर्या छन्द के प्रथम एवं द्वितीय चरण में चार-चार मात्रा वाले सात गण होते हैं और एक गुरु होता है । आर्या के चार चार मात्रा वाले इन सात गणों में से विषम गणों में अर्थात् - प्रथम, तृतीय पञ्चम और सातवें में मध्य गुरु वाला ISI जगण नहीं आना चाहिए । छठा गण जगण ISI हो अथवा नगण और लघु रूप अर्थात् चार लघु वाला हो ।

यदि छठा गण नगण और लघु रूप अर्थात् चार लघु वाला हो तो उस गण के द्वितीय लघु से पूर्व अर्थात् प्रथम लघु पर यति होती है,

प्रथम लघु पर पद भी समाप्त हो जाना चाहिए। यदि सातवां गण चार लघु वाला हो तो गण के पहले लघु से पूर्व-अर्थात् छठे गण के अन्त में यति होती है और पद समाप्त हो जाना चाहिए। यह पूर्वार्द्ध का नियम है।

उत्तरार्द्ध अर्थात् तृतीय और चतुर्थ चरण का यह लक्षण है कि यदि पांचवां गण चार लघु वाला हो तो पहले लघु से पूर्व चतुर्थ गण के अंत में पद समाप्त होकर यति होनी चाहिए तथा इसमें छठा गण एक लघु का होता है। शेष पूर्वार्द्ध जैसा होता है।

2. इन्द्रवज्रा - छन्द इन्द्रवज्रा का लक्षण वृत्तरत्नाकर के अनुसार निम्न है-

तगण तगण जगण गु० गु०

S S I, S S I, I S I, S S

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ॥३०॥

अन्वय- यदि तौ जगौ गः इन्द्रवज्रा स्यात्।

अर्थ - जिस पद्य के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और दो गुरु हों उसे इन्द्रवज्रा छंद कहते हैं।

उदाहरण-

S S I, S S I, I S I, S S, S S I, S S I, I S I, S S

गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ

यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थं चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः॥

2. उपेन्द्रवज्रा - छन्द उपेन्द्रवज्रा का लक्षण निम्न है -

जगण तगण जगण गु० गु०
ISI, SSI, ISI, S S
उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ॥

अन्वय - जतजास्तो गौ उपेन्द्रवज्रा

अर्थ - जिस पद्य के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु हों उसे उपेन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं। इसके पादान्त में यति होती है।

उदाहरण -

IS ISSI ISISS, SSIS SIIS ISS
जिता जगत्येष भवभ्रमस्ते गुरूदितं ये गिरिशं स्मरन्ति।
उपास्यमानं कमलासनाद्यै-रुपेन्द्रवज्रायुधवारिनाथैः॥

3. वंशस्थ - छन्द वंशस्थ का लक्षण निम्न है -

जगण तगण जगण रगण
IS I, SS I, IS I, S IS
जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

अन्वय - जतौ जरौ वंशस्थम् उदीरितम्।

अर्थ - जिस पद्य के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण और रगण हों उसे वंशस्थ कहते हैं। इसके पादान्त में यति होती है।

उदाहरण -

ISI, SSI, ISI, SIS, ISI, SSI, ISI, SIS
विशुद्ध वंशस्थमुदारचेष्टितं गुणप्रियं मित्रमुपात्तसज्जनम्।

५. <u>मन्दाक्रान्ता</u> – छंद मन्दाक्रान्ता का लक्षण निम्न है –

म भ न त त गु॰गु॰
S S S, S I I, I I I, S S I, S S I, S S
मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत् ॥

अन्वय - चेत् म्भौ नतौ तात् गुरू तदा मन्दाक्रान्ता इति नाम छन्दो भवति। जलधिभिः चतुर्भिः, षड्भिः, अगैः सप्तभिश्च इति।

अर्थ - जिस पद्य के प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु हों उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं। चार, छह और सात वर्णों पर यति होती है।

उदाहरण -

S S S, S I I, I I I, S S I, S S I, S S
नानाश्लेष-प्रकरणचणा चारुवर्णोज्ज्वलान्तो,
नानाभावा कलितरसिक श्रेणिकान्तान्तरङ्गा।
मुग्धस्निग्धै-मृदुमृदुपदैः क्रीडमाना पुरस्तात्
मन्दाक्रान्ता भवति कविताकामिनी कौतुकाय ॥

5. <u>मालिनी</u> - छंद मालिनी का लक्षण निम्न है -

न न म य य
I I I, I I I, S S S, I S S, I S S
ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ॥

अन्वय - इयं मालिनी ननमयययुता भोगिलोकैः।

अर्थ - जिस पद्य के प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, एक मगण और दो यगण हों उसे मालिनी छंद कहते हैं।

उदाहरण -

I I I, I I I, S S S, I S S, I S S
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

6. <u>शिखरिणी</u> - छंद शिखरिणी का लक्षण निम्न है -

य म न स भ ल० गु०
। S S, S S S, । । ।, । । S, S । ।, । S
रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ॥

अन्वय - यमनसभला गः शिखरिणी ।

अर्थ - जिस पद्य के प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु और गुरु हों उसे शिखरिणी छंद कहते हैं। इसके छह और ग्यारह वर्णों पर यति होती है।

उदाहरण -

। S S, S S S, । । ।, । । S, S । ।, । S
यदा किञ्चिद्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः ।
यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः ॥

7. <u>हरिणी</u> - छंद हरिणी का लक्षण निम्न है -

न्सौ म्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा ।

अन्वय - न्सौ म्रौ स्लौ गः यदा तदा हरिणी ।

अर्थ - जिस पद्य के प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, सगण, मगण, रगण, सगण लघु और गुरु हों उसे हरिणी छन्द कहते हैं। इसमें छह, चार और सात वर्णों पर यति होती है।

उदाहरण -

न स म र स ल० गु०
। । ।, । । S, S S S, S । S, । । S, । S
न समरसनाः काले भोगाश्चलं धनयौवनम्,
कुरुत सुकृतं यावन्नेयं तनुः प्रविशीर्यते ।
किमपि कलना कालस्यैयं प्रधावति सत्वरा,
तरुणहरिणी सन्त्रस्तेव प्लवप्रविसारिणी ॥